

मंडे पॉजिटिव इनोवेशन : चेन्नई मूल के छात्र की टेक्नोलॉजी पर इंफ्रारेड आधारित मोशन डिटेक्टरों की तुलना में 63% कम खर्च

स्मार्ट स्ट्रीट लाइट: भारतीय मूल के छात्र करीम ने निकाला बिजली बचाने का तरीका, गूगल साइंस फेयर ग्लोबल कॉन्टेस्ट में चुना गया

इस टेक्नोलॉजी आने पर लाइट फिर अपने आप

गूगल साइंस फेयर में 100 प्रतिभागियों के प्रोजेक्ट में से इसे बेस्ट माना गया

एजेंसी/दुबई

दुबई में रहने वाले एक भारतीय छात्र ने गूगल के इंटरनेशनल साइंस फेयर के फाइनल में जगह बनाई है। उन्होंने 100 क्षेत्रीय प्रतियोगियों की टूर्नामेंट में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। बिजली की बर्बादी पर लगाम लगाने और स्ट्रीट लाइटों 'स्मार्ट' बनाने की उसकी परियोजना के लिए उसे हल्का स्थान मिला है।

दुबई के इंडियन हाई स्कूल में 11वीं कक्षा के छात्र शामिल करीम ने 'गूगल साइंस फेयर ग्लोबल कॉन्टेस्ट' के लिए चुना गया। इस प्रतियोगिता के लिए आई हजारों प्रतियोगियों में से शामिल का चयन किया गया। करीम ने बताया, कोई कार या व्यक्ति किसी रास्ते से गुजर रहा है तो उसके आगे के रास्ते पर रोशनी खुद ही तेज हो जाती है और उसके पीछे की रोशनी हल्की हो जाती है, जिससे बिजली की बचत होती है। चेन्नई मूल के रहने वाले 15 साल के शामिल ने महंगे इंफ्रारेड मोशन डिटेक्टरों का इस्तेमाल करने की बजाय फोटो-रेजिस्टर्स का इस्तेमाल किया ताकि गुजरती कार की परछाई का पता चल सके। शामिल का यह प्रोजेक्ट इंफ्रारेड मोटिवेशनल सेंसर पर होने वाले खर्च की तुलना में 63% सस्ता है।



शामिल करीम

प्रेरणा: पार्क में बिजली की बर्बादी देख पापा ने अफसोस जताया, इसी से आइडिया आया

शामिल के मुताबिक स्ट्रीट लाइटों को पूरी तरह बंद नहीं कर सकते और अचानक जला भी नहीं सकते। लिहाजा, समाधान यह है कि जब भी आप रास्ते के जिस हिस्से पर चलें, वहां रोशनी तेज हो और गुजर जाने पर हल्की हो जाए। शामिल ने बताया कि बिजली बचाने की प्रेरणा उसे पापा से मिली। हम देर रात पार्क में थे और लाइटें जल रही थीं। पापा ने कहा कि हम कुछ नहीं कर सकते? तभी तय किया, स्ट्रीट लाइटों को स्मार्ट बनाने पर काम करेंगे।

35 लाख की स्कॉलरशिप: बड़ी समस्याओं को हल करने के लिए किशोरों को मौका

इस कंपीटिशन में 13-18 वर्ष के छात्रों को दुनिया की बड़ी समस्याएं हल करने की चुनौती मिलती है। उन्हें साइंस, मैथ, टेक्नोलॉजी और इंजीनियरिंग की मदद से इनका हल निकालना होता है। पहले पुरस्कार में 35 लाख रु. स्कॉलरशिप दी जाती है। इस साल 100 देशों से टेक, सेहत, पर्यावरण, सड़क सुरक्षा, पानी की समस्या, प्रकृति और वन्य जीव सुरक्षा से जुड़े इनोवेटिव आइडिए शेयर किए गए। सबसे ज्यादा 18 प्रतिभागी भारत से हैं।

जरूरतमंद बच्चों जॉय प्रोजेक्ट भी

करीम ने अपने भारतीय मित्रों के जल्द प्रोजेक्ट टॉय-जॉय भी तहत करीम और उनके दोस्तों के लोगों से उनके घर वाले खिलाते इकट्ठे करवा कर जल्द जरूरतमंदों को दान करते हैं। ताकि ऐसे बच्चों जिन्हें खिलौनों की जरूरत उनके दोस्त यश को य साल पहले उस वक्त खिलौनों को फेंक रहे थे तक पहुंची, क्लास के गए। अभियान को टॉय जल्द ही अभिया बंगल

भारतीय बच्चों के सेहत और जिंदगी से जुड़े 5 इनोवेटिव प्रोजेक्ट भी पसंद किए गए

- सचिन सिंह : एआई आधारित मोबाइल सॉल्यूशन बनाया, दिल से जुड़ी परेशानियों का पहले ही पता लगा सकते हैं।
- एयू नचिकेत कुमार और अमन: रबर लेटेक्स के लिए प्राकृतिक कोएर्युलेंट बनाया।
- ललिता पिंगली : पर्सनल औरल हेल्थ एडवाइजर बनाया, इसमें सेंसर, क्लाउड और मशीन लर्निंग भी है।
- रिषक कनपर्ती : लाइटसेफ- कंप्यूटर विजन अल्गोरिदम है, इससे रोड सुरक्षा पुख्ता होगी।
- आयुष्य घरात : एम न्यूट्रीशन सॉफ्टवेयर- पांच साल से कम बच्चों में कुपोषण के बारे में पता लगाकर बताएगा।